दिसम्बर 2018

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 31 पंचम् अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान

15 आर्थिक परिदृश्य

20 राष्ट्रीय परिदृश्य

23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

27 क्रीड़ा जगत्

30 प्रमुख व्यक्तित्व एवं उनके महत्वपूर्ण योगदान

32 विज्ञान समाचार

34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

40 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

लेख

42 समसामयिक लेख—दीर्घोपयोगी विकास की संकल्पना

44 प्रौद्योगिकी लेख—जैव ईंधन से वायुयान की उड़ान

46 कृषि लेख—कृषि उत्पादन बढ़ाने में नील-हरित शैवाल-जैव उर्वरक की भूमिका

हल प्रश्न-पत्र

48 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) (प्रथम चरण) परीक्षा, 2018

56 उत्तराखण्ड प्रतिरूप सहायक अधिकारी परीक्षा, 2018

63 छत्तीसगढ़ स्टाफ नर्स भर्ती परीक्षा, 2018

71 मध्य प्रदेश सहायक गुणवत्ता अधिकारी समूह-2 (उपसमूह-1) एवं अन्य समकक्ष पदों हेतु संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2018

80 राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2017 (लेवल-1 : कक्षा I से V तक)

96 राजस्थान संगणक सीधी भर्ती परीक्षा, 2018

101 आगामी केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल कॉंस्टेबिल (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2018

107 आगामी मध्य प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-पेडगोजी

विविध/सामान्य

112 सामान्य जानकारी—अद्यतन बोलते तथ्य एवं आँकड़े : एक दृष्टि में

119 ज्ञान वृद्धि कीजिए

121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

श्रद्धा, शक्ति, सम्मान स्वरूपा नारी का महत्व समझिए

मनुस्मृति में लिखा है कि जिस कुल में अपमानादि के कारण कुल वधुएं शोकाकुल रहती हैं, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है. स्मृति-काल में नारी को धन-धान्य, विद्या-बुद्धि, शक्ति की अधिष्ठात्री के रूप में प्रतिष्ठित किया है. नारी हमारी श्रद्धा एवं हमारे सम्मान की पात्र है.

सामाजिक संस्थाओं द्वारा नारी-उत्थान सम्बन्धी प्रस्तावों की भरमार, संविधान के प्रावधानों की घोषणाएं तथा नारी-कल्याण सम्बन्धी वर्षों से चले आ रहे आन्दोलन नारी के प्रति हमारी अवधारणाओं में परिवर्तन नहीं कर सके हैं. दहेज के नाम पर हत्याएं, आत्महत्याएं एवं कुल-वधुओं को दी जाने वाली भाँति-भाँति की प्रतारणाओं के समाचार प्रायः नित्य ही पढ़ने और सुनने को मिलते रहते हैं. कहने को हमने नारी को समान अधिकार प्रदान कर दिए हैं. उनको प्रोत्साहन देने के लिए आरक्षण की व्यवस्थाएं भी की जा रही हैं, परन्तु समग्ररूपेण परिणाम यह है कि नारी का माता-रूप तिरोहित हो गया है. नारी पुरुष वर्ग के निकट अधिकाधिक भोग की सामग्री बनती जा रही है.

स्मृति-काल में नारी को महिमा-मण्डित करते हुए कहा गया था कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है–'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता.' उसको धन्य-धान्य, विद्या-बुद्धि, शक्ति आदि की धात्री एवं अधिष्ठात्री के रूप में प्रतिष्ठित करके लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा आदि के रूप में उसकी आराधना की गई. जर्मनी के दार्शनिक कवि गेटे ने भी नारी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा कि ''अपना घर और अच्छी नारी स्वर्ण और मुक्ता के समान है.''

काल-प्रवाह के साथ नारी के कल्याण-कारी स्वरूप का क्षरण होता गया और एक समय आया, जब कबीर आदि सन्तों ने उसको समस्त पापों का मूल मानकर सर्वथा निंद्य एवं त्याज्य बता दिया. हम आज भी नहीं सोच पा रहे हैं कि ऐसा क्यों कर सम्भव हुआ कि 'माता' को नरक का द्वार अथवा संसार-सागर में निवास करने वाली छाया-ग्राहिणी राक्षसी कहकर नारी की कदर्थना की गई.

आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने चिर पीड़ा एवं कष्ट को नारी की नियति मानकर उसके प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट की और नारी को करुणा के आलम्बन–रूप में प्रतिष्ठित कर दिया–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।

कवि जयशंकर प्रसाद ने बादलों के पीछे से झाँकती हुई किरण के रूप में नारी के सहज कल्याणकारी स्वरूप का दर्शन किया और समाज को सावधान करते हुए कहा कि–

●●●